

# Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



Founder's Essay

## हम अपने हृदय में कौन सी कामना करते हैं

जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो शराब का आदी है या क्षुधा की कमी से पीड़ित है, तो हम मान सकते हैं कि उसने इस तरह से अपने को समाप्त कर लिया है, क्योंकि वह स्वयं को संभालने में समर्थ नहीं है। लेकिन फिर हम विशेषज्ञों से यह भी सुनते हैं कि जो लोग अपने आस-पास के लोगों से स्वयं को दूर कर लेते हैं, वे वास्तव में लोगों के साथ स्नेहभरा संबंध चाहते हैं - वे चाहते हैं कि कोई उन्हें गले लगाये, क्योंकि वे स्वयं को बहुत कमजोर महसूस करते हैं।

बुद्ध ने हमें पुण्डरीक सूत्र में बताया कि वे "सभी जीवित प्राणियों के मन और मस्तिष्क की अन्तःकरण की कार्यप्रणाली को जानते हैं, वे बिना किसी बाधा के गहराई में पैठते हैं।" अक्सर लोगों के बीच सम्बन्ध का अभाव होता है कि लोग क्या कहते हैं या क्या करते हैं और उनके मन के भीतर क्या है। यद्यपि हम लोगों के लिए अच्छा होने की कामना करते हैं, लेकिन क्या हम उनके प्रति अनायास ही निर्दयी नहीं होंगे?

भले ही हम जानते हैं कि हमें वही करना चाहिए जो सही है, लेकिन क्या हम अपने आप को आलसी बनने की अनुमति नहीं देते हैं?

कोई भी व्यक्ति अंतरात्मा की आवाज से वञ्चित नहीं है। हम लोगों को केवल उनके व्यक्त शब्दों और किये कार्यों से देखने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि वे कितनी गहराई से पीड़ित हैं, भले ही वे अनायास ही बुरे काम कर रहे हैं जिसे वे जानते हैं कि उन्हें नहीं करना चाहिए।

यदि आप प्रथम अपने मन पर लंबा, कठोर रूख नहीं रखते हैं, तो दूसरों के दुःख में भागीदारी करने की अनुमति देनेवाली सहानुभूति पैदा नहीं होगी। उस करुणा के बिना, आप किसी को भी मुक्त कराने के प्रयास में सक्षम नहीं होंगे।

निकक्यो निवानो, काइसो जुइकान 9  
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 36 - 37

Living the Lotus  
Vol. 164 (May 2019)

Senior Editor: Koichi Saito  
Editor: Kensuke Suzuki  
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly  
by Rissho Kosei-kai International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: [living.the.lotus.rk-international](mailto:living.the.lotus.rk-international)

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निकक्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

## हमारे दुखों का अंत क्यों नहीं होता है ?



श्रद्धेय निचिको निवानो  
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



### “दुःख” दो अर्थों में है

जब लोग बहुत कष्टों का सामना कर रहे हैं या कई कठिनाइयों से घिरे हुए हैं, तो हम जापानी कहते हैं कि वे शिकू हाक्कू याने “चार कष्ट, आठ कष्ट” से गुजर रहे हैं। यह सर्वविदित है कि शिकू हाक्कू एक बौद्ध उक्ति है - वास्तव में, यह मानव अस्तित्व के बौद्ध दृष्टिकोण का वर्णन है।

हम इस लोक में जन्म लेते हैं, बढ़कर जरा को प्राप्त होते हैं, व्याधियों का शिकार होते हैं और अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। जन्म, जरा, व्याधि, एवं मृत्यु, चार अनिवार्य कष्टों का गठन करते हैं। इसके अतिरिक्त चार अन्य दुःख भी हैं: जो प्रिय है, उससे वियोग होना, जो अप्रिय है उसके साथ सम्पर्क में आना, जिसकी कामना है, उसका नहीं मिलना, और व्यक्ति का समग्र जीवन, जिसमें शारीरिक और मानसिक कामकाज के सिलसिले में दुःख उत्पन्न होता है। ये सभी आठ जीवन में दुःख हैं। बौद्ध धर्म हमें सिखाता है कि ऐसी घटनाओं से मानव प्राणी दुःखी है।

हालाँकि, शाक्यमुनि ने “दुःख” शब्द के प्रयोग में, शब्द की बारीकियों को नहीं दिखाया गया है, जैसाकि हम आम तौर पर आज इसका उपयोग करते हैं - यानी, कुछ चीजें व्यथित करती हैं, तो कुछ चीजों का करना पीड़ा दायक है। व्यथा या पीड़ा का संस्कृत में प्रयायवाची शब्द दुःख (पाली, दुक्ख) है, जिसका अर्थ है “ऐसी चीजें जो किसी की इच्छा के अनुसार नहीं चलती हैं। इसलिए, पहले बताए गए आठ प्रकार के दुःखों में से प्रत्येक का अर्थ यह है कि आप उनके सम्बन्ध कुछ भी नहीं कर सकते हैं। फिर भी, जब आप किसी स्थिति के बारे में कुछ करना चाहते हैं या उसके प्रति जुनून हो जाता है, उसे छोड़ने में लाचार हैं, तो आपके मन में अप्रिय और व्यथा की भावनाएँ पैदा करता है। उस समय, अप्रिय व्यथा आदि भावनायें सामान्य दुःख में आती हैं जो आपको शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करती हैं।

मानव जीवन में अन्तहीन चलनेवाले दुखों का वर्णन पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त - 2, “उपाय कौशल्य,” में इस प्रकार है:

जन्म और मृत्यु के संकटपूर्ण मार्ग में,  
उनकी पीड़ा में कोई राहत नहीं मिलता है,  
[वे] पाँच इच्छाओं से दृढ़ता से जुड़े हुए हैं,  
जैसेकि याक अपनी ही पूँछ से ग्रस्त है।

यह मार्ग बताता है, क्योंकि हम इच्छाओं से जुड़े हुए हैं, हमारे दुःख के सिलसिले का अन्त नहीं होता है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि गाथा हमें बताता है:



विकृत विचारों की गहराई से डूबा होने के कारण,

दुःख का अन्त करने का प्रयास और अधिक दुःख पैदा करता है।

अर्थात्, जब हम निराश होते हैं, हम इस तथ्य को स्वीकार करने में असमर्थ होते हैं कि चीजें हमारी इच्छा के अनुसार नहीं घटती हैं। हम चिंतित होते हैं और दुःख को अधिक तीव्रता से महसूस करते हैं। शास्त्र हमारी भावनाओं की इस स्थिति को बताता है।

## पीड़ा स्रोत है जिससे ज्ञान उत्पन्न होता है

ऐसे उदाहरण हैं जिनके बारे में आस - पास के लोगों से भी हम सुनते हैं कि वे लोग जो पीड़ा की अनुभूति से बचने की कोशिश करते हैं, वे और अधिक पीड़ा को बुलाते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जो हजारों डॉलर का कर्ज लेता है, वह किसी अन्य पार्टी से दूसरा ऋण लेकर ऋण चुकाने की पीड़ा से दूर होने की कोशिश करता है। यह पीड़ा को समाप्त करने का एक प्रयास है जो अधिक दुःख पैदा करता है। इससे बचने का वह कितनी ही कोशिश करे, उसका दुःख कभी दूर नहीं होगा।

भिक्षु एवं कवि, साइग्यो (1118-90), ने खेद व्यक्त करते हुए लिखा है:

अंधेरे में खो गये, इस तैरते संसार में, वे क्यों नहीं थकते ?

वे स्वयं के बारे में नहीं सोचते हैं, अपने दिली इच्छा के अनुसार करते हैं।

यह कविता हमसे पूछती है - हम महसूस करते हैं कि हम पीड़ित हैं, क्योंकि हमें इच्छाओं की अग्नि भस्म कर रही है, उनके द्वारा संचालित होते हैं - क्योंकि हम कभी महसूस नहीं करते हैं कि क्या महत्वपूर्ण है और अपनी मानसिकता को बदल देते हैं।

यहाँ, "क्या महत्वपूर्ण है" का अर्थ है कि आप दुःखों को नहीं झेल रहे हैं, बल्कि आप दुःखों की भावना को झेल रहे हैं, और आपको एहसास होता है कि दुःखों के साथ आपका सामना ज्ञान की आँखों के खुलने का अवसर है। दुःख, जिसमें उत्पीड़न, विषाद, क्रोध पीड़ा आदि आते हैं, जब तक आपकी भावनायें उनमें नहीं मिल जाती हैं, तटस्थ, क्रियामात्र (संस्कृत - अव्याकृत; पाली - अव्याकत) है, - दूसरे शब्दों में, नहीं कुशल और नहीं अकुशल हैं। इसलिए, दुखों को स्वीकार करना और अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना आने से, आप अपने जीवन में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

मैंने अभी किसी ऐसे व्यक्ति की कहानी का उल्लेख किया है जो कई सौ हजार डॉलर के कर्ज में डूबा हुआ है। उसने मुझे स्पष्ट रूप से कहा कि जब उसने ऋण को एक आवश्यक रास्ता के रूप में स्वीकार कर लिया, तो वह दुःख की भावनाओं के बिना उसकी स्थिति के बारे में सोचने में सक्षम हो गया, और इसके अतिरिक्त, इसे एक खुशी के रूप में भी देखने लगा।

एक बार जब हम दुःख को स्वीकार करने का संकल्प लेते हैं तो इससे बचने का प्रयास किए बिना, यह एक ऐसा स्रोत बन जाता है जिससे ज्ञान आगे बढ़ता है। अगर हम स्वीकार कर सकते हैं कि हमारे पास जो ज्ञान है, उसे सक्रिय करने के लिए दुख आवश्यक है, तो यह एक महत्वपूर्ण संकेत बन जाता है जो हमारे खुशी की ओर इशारा करता है, और हम दुःख की अपनी भावनाओं को पीछे छोड़ सकते हैं।

यह जीवन एक तरीका है जिसमें आप दुःख से पीड़ित हैं, लेकिन दुःख महसूस नहीं करते हैं। बौद्ध धर्म में, इस सम्बन्ध में कई देशनायें हैं, जैसे कि चार आर्य सत्या। हालाँकि, हमने उन्हें सीखा है, फिर भी जब हम दुःख के स्रोत का सामना करते हैं, तो हमें कुछ दुःख होता है। मुझे लगता है कि यह सब ठीक है अगर हम अनुभव करते हैं - आखिरकार, अगर हमें कभी दुःख नहीं हुआ, तो हम कभी भी खुशी की ओर नहीं जा सकते हैं: बुद्ध की शिक्षा है।

कोसेइ से, अप्रैल 2019





## समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

### प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

#### सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

#### अध्याय 7: मायावी शहर का दृष्टान्त (2)

### जीवन के महत्व को पहचानना

जैसाकि जलते महल और धनी वरिष्ठ पुरुष और निर्धन पुत्र के दृष्टान्त में, बुद्ध के एकयान के दोहरे सिद्धान्त और उपाय कौशल्य की यथार्थता को दर्शाया गया है। लेकिन यह केवल दोहरा सिद्धान्त नहीं है, बल्कि अर्थ की एक नई छाया है: एक सुझाव है जिसमें जीवन का उद्देश्य रचनात्मक जीवन शैली में निहित है।

यहाँ एक लंबा, दुर्गम मार्ग है जिससे जीवन की यात्रा चलती है, और इस यात्रा में हमें सभी प्रकार की कठिनाइयों तथा संकटों का सामना करना है। हम सभी इन कष्टों को झेलकर पार करने का प्रयास करते हैं, लेकिन चीजें शायद ही हमारे मनोनुकूल होती हैं। वैसी प्रतिकूल चीजें मार्ग में आ जाती हैं कि हम में से बहुत से लोग मार्ग को सहज ही छोड़ देते हैं।

कई सामान्य लोग असफलता के मार्ग में गिर जाते हैं, यह सोचकर कि वे कितना ही कठिन परिश्रम करें, उनका परिश्रम उन्हें लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकता है। और अब उनके लिए सबसे अच्छा कोई दूसरा रास्ता है जो उन्हें बाधाओं से बाहर ले जायेगा और उन्हें जो कुछ भी वे जीवन से सुख मिल सकता है, उसे प्राप्त

करना है। वे प्रगति की कोशिश करना छोड़ देते हैं, और जीवन के एक सरल दृष्टिकोण में प्रवेश कर जाते हैं।

दूसरी ओर, निम्न स्तर के नैतिक समझवाले लोग भी हैं जो आसानी से गलत मार्ग में गिर जाते हैं, क्योंकि वे परिणामों पर बिना विचार के किए ही सुगम मार्ग पकड़ लेते हैं।

इन चरम सीमाओं के दोनों पक्षों के लोग, जीवन के वास्तविक महत्व को समझ नहीं पाते हैं, जैसा कि पूर्व में कुछ विस्तार से बताया गया है, निरंतर प्रगति सभी जीवित प्राणियों के जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह लोगों के जीने का सही और सच्चा तरीका है। मानव जीवन की पीड़ा से पराजित होना, जीने के इस स्वाभाविक और सच्चे तरीके को भूल जाना, या मार्ग के मध्य में रुक जाना या पीछे मुड़ जाना, मानव प्राणी के सच्चे मूल्य को नकारना है।

### शांतिपूर्ण जीवन जीना

बुद्ध ने मानव प्राणी से मन की एक मात्र दृष्टिकोण की बात कही, “रुको! यदि तुम केवल ऐसा करते हो, तो तुम बिना दुःख और बिना पीड़ा के शांतिपूर्ण जीवन जी सकते हो। तुम्हारी आँखों के सामने स्पष्ट रूप से केवल अस्थायी दृश्य हैं, जो गुजर रहा है। उसके साथ मत जाओ और हमेशा शांति से रह सकते हो। यहाँ, बुद्ध हमें जो आँखों से दिखता है उससे परे जाने के लिए कहते हैं।

इस प्रकार, आकांक्षाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, अगर कोई इस तरह से चीजों को ठीक से देखता है, तो शांतिपूर्ण जीवन जीना संभव हो जाता है। इस दृष्टान्त में मार्गदर्शक द्वारा दिया गया निर्देश का अर्थ है कि वह विशाल नगर का निर्माता है और साथ चलनेवाले को निर्देश देता है कि वे वहाँ जाएँ और आराम करें।

### रचनात्मक और सामंजस्यपूर्ण जीवन

लेकिन, जब मार्गदर्शक के अनुयायी आराम करते हैं, तो वह मायावी नगर को लुप्त कर देता है और उन्हें मानव जीवन के अंतिम आदर्श की ओर आगे बढ़ने का आग्रह करता है। लोग पहले





आश्चर्यचकित और भ्रमित होते हैं, लेकिन वे शीघ्र ही संभल जाते हैं और एक बार फिर आगे के मार्ग पर निकल जाते हैं।

“मानव जीवन का अंतिम आदर्श” से आशय यहाँ रचनात्मक और सामंजस्यपूर्ण जीवन से है। दृष्टांत हमें सिखाता है कि हमें दिखावे से परे जाना होगा यदि हम मानवीय पीड़ा से बचकर मनः शांति की स्थिति तक पहुँचना चाहते हैं, लेकिन यह भी सम्यक बोधिज्ञान के मार्ग में एक मंच है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि भले ही हम बुद्ध मार्ग में समर्पित हैं, स्वयं को पीड़ा होने से बचा सकते हैं, परन्तु, संसार में बड़ी संख्या में लोग इससे धिरे हुए हैं। इन लोगों को छोड़कर आगे निकल जाना और स्वयं सहज सुखद अवस्था को पहुँच जाना एक प्रकार का पलायन है, एक अभिमानी स्वार्थपरता है। यह सही अर्थों में सम्यक बोधिज्ञान नहीं है। पीड़ित मनुष्यों के साथ साथ खुशी प्राप्त करने का प्रयास करना, वास्तव में मानवीय जीवन जीना है। इसलिए, हमें अस्थायी आसान और संतोषप्रद किसी भी भावना से दूर रहना चाहिए, मयावी नगर को छोड़कर नये संघर्षों से भरा मार्ग पर प्रयाण करना चाहिए।

भले ही यह भयावह मार्ग उसी मार्ग की तरह प्रतीत होता हो, जिससे अभी गुजर चुके हैं, वास्तव में यहाँ भी संघर्ष करना है, लेकिन, यह एक बिलकुल भिन्न आयाम का संघर्ष है। इस कार्य का मूल्य बहुत अधिक उत्तम है, क्योंकि यह लोगों के सुख और कल्याण के लिए बोधिसत्व का कार्य है।

जब हम अनुभव करते हैं कि हमारे जीवन का अर्थ है, जैसे हम चीजों और विचारों को बनाने के लिए काम करते हैं, हमारा मन और मस्तिष्क उस स्थिति में पहुँच जाता है, जिसमें यह कार्य खुशी देता है।

इस प्रकार, यदि हम सभी जीवन की यात्रा में अपनी प्रकृति, प्रतिभा और व्यवसाय के योग से हमेशा प्रयास करते हैं - उन चीजों का निर्माण करते हैं जो दूसरों को और स्वयं अपने को भी खुशी देते और जीवन कुशल बनाते हैं। सृजन का काम निश्चित रूप से अधिक सामंजस्यपूर्ण बनाता है। सद्भाव का बनता स्वरूप

### कारण- कार्य के द्वादसांग और प्रतिज्ञा

मायावी नगर के दृष्टांत के अतिरिक्त, यह परिवर्त महत्वपूर्ण देशनाओं से परिपूर्ण है। विशेष रूप से उल्लेखनीय कारण-कार्य के

द्वादसांग का सिद्धांत हैं और कविता में निम्नलिखित चार पंक्तियाँ हैं, जो एकत्र ब्रह्मराजाओं द्वारा कही गई हैं:

ये योग्यताएँ हैं  
जो सभी के लिए अनिवार्य है,  
ताकि हम और सभी जीवित प्राणी,  
एक साथ बुद्ध मार्ग को प्राप्त करें !

इन चार पंक्तियों को सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा की समापन गाथा के रूप में जाना जाता है क्योंकि वे महायान बौद्ध धर्म के कई संप्रदायों में सेवाओं के समापन शब्दों के रूप में प्रयुक्त हैं।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,  
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 81 - 86)



### खुशी की ओर ले जानेवाले मार्ग पर चलना

मई जापान में ऐसा महीना है जब हवा में सुखापन रहता है और पेड़ों पर ताजी हरी पत्तियाँ उग आती हैं। पारंपरिक कैलेंडर के अनुसार, गर्मी में मई महीना आता है। इस महीने में ही मदर'स डे आता है। यह ऐसा सुअवसर है, जब हम जीवन का उपहार पाने के लिए अपनी अपनी माताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

रिशो कोसेइ काइ के लिए, यह युवा दिवस की पचासवीं वर्षगाँठ का महीना भी है। यह एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसमें हमारे युवा सदस्य अपने स्थानीय समुदायों के साथ विभिन्न गतिविधियों में संलग्न होकर शांति के प्रयास में योगदान करते हैं। संस्थापक निक्क्यो निवानो की युवाओं पर बहुत सारी उम्मीदें थीं। युवा लोगों के द्वारा किया कार्य आगे के विकास के लिए होता है। उन्हें विश्वास था कि युवा हमेशा उत्साह के साथ अपनी गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितने वर्ष के हैं, यदि हम हर पल उत्साह के साथ जीते हैं। तब भी हम युवा हो सकते हैं, क्या हम नहीं हो सकते?

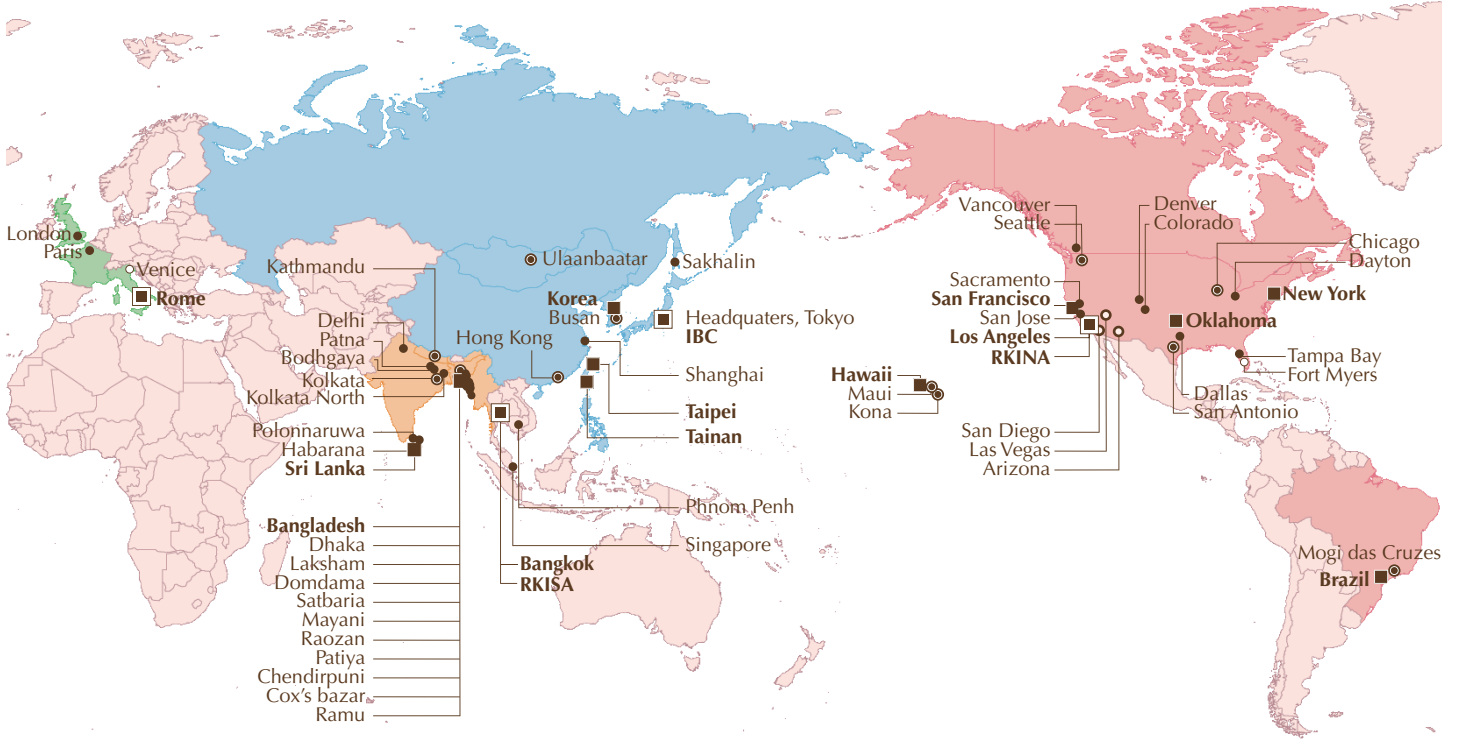
इस महीने के अपने संदेश में, प्रेसिडेंट निचिको निवानो ने हमें सिखाया है कि जब तक हम सांसारिक इच्छाओं में लिप्त हैं, हम दुःख से पीड़ित रहते हैं। यदि हम दुःख को, जिस रूप में हैं, स्वीकार कर लेते हैं, तो इससे छुटकारा पाने की कोशिश करने के बजाय, हम बुद्ध के ज्ञान को प्राप्त करने में अधिक सक्षम हैं।

मुझे उम्मीद है कि हम सभी को समाज और लोगों की सेवा में अपने को समर्पित करेंगे, क्योंकि ऐसा करने से हम अपने दुःख को ईंधन में बदल सकते हैं जो हमें आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में सक्षम बनाता है, जैसेकि कमल एक कीचड़ भरे तालाब में सुंदर पुष्प के रूप निकलना है।

रेव. कोइची साइतो  
निदेशक, रिशो कोसेइ काइ इंटरनेशनल



# Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



## Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
 Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224  
 e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

## Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.  
 Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437  
 e-mail: info@rkina.org <http://www.rkina.org>

### Branch under RKINA

#### Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.  
 Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261  
 e-mail: rkseattlewashington@gmail.com  
<http://buddhistlearningcenter.org/>

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.  
 P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, U.S.A.  
 Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745  
 e-mail: dharmasanantonio@gmail.com  
<http://www.rkina.org/sanantonio.html>

#### Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.  
 Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com  
<http://www.buddhismtampabay.org/>

#### Rissho Kosei-kai of Vancouver

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.  
 Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633  
 e-mail: info@rkhawaii.org <http://www.rkhawaii.org>

#### Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.  
 Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

#### Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.  
 Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

#### Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.  
 Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567  
 e-mail: rk-la@sbcglobal.net <http://www.rkina.org/losangeles.html>

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado  
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego  
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas  
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

## Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.  
 Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437  
 e-mail: info@rksf.org <http://www.rksf.org>

## Rissho Kosei-kai of Sacramento

## Rissho Kosei-kai of San Jose

## Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.  
 Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499  
 e-mail: rkny39@gmail.com <http://rk-ny.org/>

## Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.  
 Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com  
<http://rkchi.org/>

## Rissho Kosei-kai of Fort Myers

<http://www.rkftmyersbuddhism.org/>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.  
 Tel: 1-405-943-5030 Fax: 1-405-943-5303  
 e-mail: rkokdc@gmail.com <http://www.rkok-dharmacenter.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.  
 Tel: 1-303-446-0792

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.  
<http://www.rkina-dayton.com/>

## Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,  
 CEP 04116-060 Brasil  
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 Fax: 55-11-5549-4304  
 e-mail: rissho@terra.com.br <http://www.rkk.org.br>

## Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,  
 CEP 08730-000 Brasil  
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377



**Rissho Kosei-kai of Taipei**

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,  
Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433  
<http://kosei-kai.blogspot.com/>

**Rissho Kosei-kai of Tainan**

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,  
Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

**Korean Rissho Kosei-kai**

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,  
Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696  
*e-mail:* krkk1125@hotmail.com

**Korean Rissho Kosei-kai of Busan**

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

**International Buddhist Congregation (IBC)**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan

Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224

*e-mail:* ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibrk-rk.org/>

**Branches under the Headquarters****Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,  
North Point, Hong Kong, Republic of China

**Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

**Rissho Kosei-kai of Sakhalin**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk  
693005, Russian Federation

Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai****Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

**Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

*e-mail:* thairissho@csloxinfo.com

**Branches under the South Asia Division****Rissho Kosei-kai of Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,  
New Delhi 110060, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,  
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

**Rissho Kosei-kai of Bodhgaya**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road  
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,  
Nepal

**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,  
Phnom Penh, Cambodia

**Rissho Kosei-kai of Patna****Rissho Kosei-kai of Singapore****Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

*e-mail:* info.thairissho@gmail.com

**Rissho Kosei-kai of Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh

Tel & Fax: 880-31-626575

**Rissho Kosei-kai of Dhaka**

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,  
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh

Tel & Fax: 880-2-8413855

**Rissho Kosei-kai of Mayani**

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:  
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Patiya**

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Domdama**

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar**

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,  
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Satbaria**

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Laksham**

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,  
Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Raozan**

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Chendirpuni**

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

**Rissho Kosei-kai of Ramu****Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka

Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

**Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa****Branches under the Headquarters****Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia

Tel & Fax: 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

**Rissho Kosei-kai of the UK****Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of Paris**